

## CHAPTER 21

### HINDI

#### Doctoral Theses

01. अंजलि कुमारी  
जैनेंद्र कुमार तथा यशपाल के कथा-साहित्य में स्त्री-चरित्र : तुलनात्मक अध्ययन।  
निर्देशिका : प्रो. कुमुद शर्मा  
Th 26296

*सारांश*

*विषय सूची*

1. जैनेंद्र कुमार तथा यशपाल : व्यक्तित्व एवं कृतिव 2. गाँधीवादी और मार्क्सवादी स्त्री विषयक दृष्टिकोण। उपसंहार 3. जैनेंद्र कुमार तथा यशपाल के उपन्यासों में स्त्री 4. जैनेंद्र कुमार तथा यशपाल की कहानियों में स्त्री 5. जैनेंद्र कुमार तथा यशपाल के स्त्री-चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

02. अंजलि कुमारी  
नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं का सौन्दर्यपरक विश्लेषण।  
निर्देशक : प्रो. के.एन. तिवारी  
Th 26280

*सारांश*

नागार्जुन आधुनिक हिन्दी काव्य के अग्रणी कवि हैं। 20वीं सदी के चौथे दशक से लेकर 20वीं सदी के नौवें दशक तक वे हिन्दी कविता के पटल पर निरन्तर सक्रिय रहे। इस पूरी अवधि के दौरान, नागार्जुन ने साहित्य में अपनी सक्रिय भूमिका को छोड़े बिना कविता की निरंतरता बनाए रखी। नागार्जुन अपनी लंबी रचना यात्रा में कई काव्य आंदोलनों के प्रत्यक्षदर्शी थे। प्रयोगवाद, नवीन काव्य, अकविता आदि के काव्य आंदोलनों के समानांतर नागार्जुन प्रगतिशील काव्य मूल्यों पर दृढ़ता के साथ काव्य रचना करते रहे। उनकी कविताओं का स्वर उनके पूर्ववर्ती काव्य से लयात्मक रूप से भिन्न है। इस अंतर को प्रगतिशील कविता की विचारधारा के आलोक में पहचाना जा सकता है। आधुनिक कविता के इतिहास में प्रगतिशील कविता इन मामलों में अपने पूर्ववर्ती से अलग है। इसमें राजनीतिक चेतना का एक नया रूप और एक नए स्तर की राजनीतिक यात्रा दिखाई दे रही है। दूरदर्शिता, विचारधारा और राजनीति पर सैद्धान्तिक चर्चा और काव्य में कटुता से वस्तुनिष्ठता का आह्वान प्रगतिशील काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति है। नागार्जुन इस धारा के प्रतिनिधि कवि हैं।

### विषय सूची

1. कविता और राजनीति का अंतःसंबंध 2. राजनीति से आधुनिक हिंदी का अंतःसंबंध 3. नागार्जुन की दृष्टि में कविता और राजनीति का अंतःसंबंध 4. नागार्जुन की राजनीतिक कविताएँ : सामान्य परिचय 5. नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में व्यंग और विनोद 6. नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में सौंदर्य का वैशिष्ट्य 7. नागार्जुन की राजनीतिक कविताओं में काव्यभाषा की सृजनशीलता। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

03. अग्रवाल (असीम)  
**शैलेश मित्यानी के कहानी संसार में संवेदना का स्वरूप।**  
 निर्देशक : प्रो. विनोद तिवारी  
 Th 26292

### सारांश

शैलेश मित्यानी की कहानियों पर विभिन्न कोणों से शोध किया। इस शोध का उद्देश्य केवल कहानियों की व्याख्या करना ही नहीं था, अपितु साहित्यिक माध्यम से अपनी सामाजिक सांस्कृतिक/ आर्थिक और राजनीतिक चेतना को। समझना पड़ा कि आज की तारीख में जब एक लेखक की रचनाएँ पचास वर्षों में फैली हुई हैं अगर पढ़ लिया जाए तो उस पठन का क्या महत्व हो सकता है। और, क्या यह महत्वपूर्ण केवल साहित्यिक है यह रुचि से प्रेरित है, जहाँ मन की भूख को शांत करने के लिए पढ़ना प्रमुख है, या फिर इसके और भी मायने हैं। इस विस्तृत शोध प्रक्रिया से गुजरने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि शोध शोध 'साहित्य' पर ही क्यों न हो, केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति से संबंधित प्रश्न नहीं हो सकता। 'अनुसंधान' में आवश्यक रूप से कुछ खोजने की भावना शामिल होती है और कोई भी खोज बहु-आयामी होती है। वहीं, साहित्य स्वाभाविक रूप से हमारे सामान्य जीवन के विभिन्न आयामों से जुड़ा है, तो यहां शोध करें जीवन और समाज की गतिविधियाँ स्वतः ही शिक्षा की प्रक्रिया से जुड़ जाती हैं। हमारे अध्ययन में हम बात को हमेशा ध्यान में रखा। यही कारण है कि दूसरे अध्याय में हम केवल कुमाऊं के लोगों के बारे में बात करते हैं। जीवन के चित्रण की व्याख्या तक ही सीमित नहीं है, बल्कि हमने आज के 'भूतिया गांव' की समस्या का समाधान किया है। विस्तार से भी समझा, जिसके विभिन्न आर्थिक-सामाजिक पहलू हैं। इसी तरह अन्य न्यायालयों में हमने विभिन्न आयामों से कहानियों को समझा। जहां भी आवश्यक हो, प्रासंगिकता शैलेश मित्यानी का सवाल इसलिए भी एक बेहतरीन कहानीकार है क्योंकि उनमें जीवन के कई पहलू बड़ी विविधता और गहराई के साथ आते हैं। यहां आकर वे खास हो जाते हैं। ऐसी विविधता अन्य कहानीकारों के साथ कम ही देखने को मिलती है। शैलेश मित्यानी आपनी सामाजिक-आर्थिक परिवेश जिसे वह प्रमुखता से कहानियों में लाते हैं जीवन के अनुभव का एक हिस्सा होने के नाते, वास्तविकता उस तीव्रता और विशिष्टता के साथ आती है जो शैलेश मित्यानी हिंदी कहानी में अलग और अलग नज़र आते हैं। समाज का हिस्सा शैलेश मित्यानी की कहानियाँ प्रमुखता से लिखी गई हैं- जो हमारे विश्लेषण का मुख्य आधार हैं वे थे- वह हिस्सा और उसके द्वारा बनाए गए पात्र, हाशिए और हाशिए के बाहर के हिस्से। ऐसा जीवन इतनी जीवटता वाली हिन्दी कहानी में कच्चा यथार्थ कम ही देखने को मिलता है। इसलिए शैलेश मित्यानी का हिंदी कहानी में योगदान अतुलनीय है।

*विषय सूची*

1. स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी और शैलेश मटियानी का कहानी-संसार 2. शैलेश मटियानी की कहानियों में आंचलिकता 3. शैलेश मटियानी की कहानियों में हाशिएके समाज का जीवन 4. शैलेश मटियानी की कहानियों में प्रेम-तत्व 5. शैलेश मटियानी की कहानियां : कुछ अन्य विविध और महत्वपूर्ण आयाम। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

04. अजय आनंद

**उपन्यास संबंधी आलोचना-दृष्टि और हिन्दी में उसका विकास।**

निर्देशक : प्रो. विनोद तिवारी

Th 26272

*सारांश*

प्रस्तुत शोध प्रबंध में उपन्यास और हिन्दी में उसके विकास से संबंधित आलोचना-दृष्टि को पाँच अध्यायों के अंतर्गत संकलित किया गया है। इस संयोजन में, उपन्यास आलोचना से संबंधित प्रमुख भारतीय और पश्चिमी मान्यताओं का एक प्रासंगिक अध्ययन प्रस्तुत करने का ध्यान रखा गया है। यहाँ तुलनात्मक दृष्टि से संकेतों को पकड़ने पर मुख्य बल दिया गया है और फिर उसके विश्लेषण से उभरती एक स्वस्थ, सामाजिक और भविष्यसूचक आलोचना-दृष्टि को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य के लिए पहले और दूसरे अध्यायों को एक आँकलौजिकल और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के रूप में देखा जा सकता है। इसके बाद के तीन अध्याय मुख्य रूप से हिन्दी में उपन्यास आलोचना और उसकी परंपरा के विश्लेषण पर केंद्रित हैं। इनमें परंपरा का अर्थ इतिहास की परंपरा से लिया गया है और इन तीनों अध्यायों का आंतरिक विभाजन प्रमुख काश्तकारों और इतिहासकारों की कृतियों, स्वतंत्र निबन्धों, समीक्षा-पुस्तकों आदि के आधार पर किया गया है। यहाँ 'प्रिंसिपल' शब्द निरूपण करने आया है। उदाहरण के लिए, यदि हमने चौथे अध्याय में केवल पाँच रचनाकारों की उपन्यास दृष्टि का चयनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर विश्लेषण किया है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि हमारी पूरी परंपरा में केवल ये पाँच शामिल हैं, बल्कि केवल यह है कि ये पाँचों की सबसे अच्छी विशेषताएँ हैं।

*विषय सूची*

1. उपन्यास आलोचना संबंधी पाश्चात्य दृष्टि 2. उपन्यास आलोचना संबंधी भारतीय दृष्टि 3. हिन्दी में उपन्यास संबंधी आलोचना विकास 4. हिन्दी के प्रमुख रचनाकारों की उपन्यास संबंधी दृष्टि 5. हिन्दी के प्रमुख कथालोचकों की उपन्यास संबंधी दृष्टि। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

05. अतुल वैभव

**हिन्दी साहित्य के विकास में साहित्यिक पत्रकारिता का योगदान (21वीं सदी के पहले दशक के विशेष संदर्भ में)।**

निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह

Th 26291

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक के विशेष संदर्भ में हिंदी साहित्य के विकास में साहित्य चक्रों के योगदान को समझने का प्रयास किया गया है। हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता में क्या संबंध है? किस तरह से दोनों अलग और समान हैं? 21वीं सदी का पहला दशक हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता के बाह्य और आंतरिक स्वरूप में किस प्रकार के परिवर्तन हुए हैं? प्रथम दशक की प्रमुख सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याएँ क्या हैं? हिन्दी साहित्य में प्रथम दशक में कौन-सी विधाएँ स्थापित हुईं? हिंदी के साहित्यिक हलकों में किन प्रमुख त्योहारों पर लेखन हुआ है? नई तकनीक इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य और साहित्यिक प्रेस से कैसे जुड़ी है? हिंदी साहित्य और हिंदी साहित्य मंडलों पर मेहिया के रूप में परिवर्तन का क्या प्रभाव पड़ा? समझ गया? बालन और पंडी ने हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता को कैसे प्रभावित किया? इसका उत्तर इस शोध प्रबंध में खोजने का प्रयास किया गया है। साथ ही साहित्यिक लेखन, वितरण और पठनीयता पर प्रतिबंध, कविता और मीडिया के नए माध्यमों ने साहित्य और पाठकों के बीच संबंधों को कैसे प्रभावित किया है? सोशल मीडिया के युग में यह क्यों और कैसे बदल गया है? इन बिन्दुओं को भी समझने का प्रयास किया गया है। साहित्य के विकास में साहित्य चक्रों की भूमिका सदैव अग्रणी रही है, किन्तु विगत कुछ दशकों में साहित्य और उसके पाठकों दोनों की मनःस्थिति (मन) में व्यापक परिवर्तन आया है। उन परिवर्तनों से छुटकारा इस शोध-प्रबन्ध में उनसे परिचित होने तथा उनका अन्वेषण करने का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. साहित्यिक पत्रकारिता और हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 2 चयनित पत्रिकाओं का अंतर्वस्तु वर्गीकरण और विश्लेषण 3. इक्कीसवीं सदी के पहले दशक की राजनीतिक चेतना, अस्मिता और हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता 4. इक्कीसवीं सदी की हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता और नई तकनीक 5. इक्कीसवीं सदी के पहले दशक की हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता: संकट एवं चुनौतियाँ। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

06. अमृता श्री  
 भारत में विवाह-संस्था के सन्दर्भ में समकालीन हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन।  
 निर्देशक : प्रो.अपूर्वानंद  
 Th 26278

सारांश

अपने शोध-प्रबंध का विषय मैंने समकालीन समाज को देखकर चुना। हम जिस समाज में आज रह रहे हैं, वहाँ विवाह को लेकर युवाओं में खासा संशय देखने को मिलता है। एक तरफ संशय, डर, हिचक भी है तो दूसरी तरफ आपको उस संस्था में प्रवेश भी करना है। अमूमन आप उससे बच नहीं सकते। मैं भी उसी युवा वर्ग से संबंध रखती हूँ, इसलिए मेरी भी दिलचस्पी विवाह-संस्था को जानने और समझने में थी। विवाह को

लेकर जिस प्रकार की अवधारणाएं हमारे समाज में मौजूद थी, उसकी तह तक मुझे जाना था। विवाह को लेकर कुछ बुनियादी सवाल मेरे ज़हन में था जिसका जवाब ढूँढने के लिए मैंने विवाह-संस्था पर शोध करने का विचार किया। विवाह करने या नहीं करने का अधिकार, जीवन-साथी चुनने का अधिकार किसका हो, विवाह-संस्था के कार्य करने की प्रक्रिया आदि कुछ बुनियादी सवालों को लेकर मैंने जरूर यह शोध-कार्य शुरू किया। लेकिन जैसे-जैसे शोध कार्य आगे बढ़ता गया हम इन बुनियादी सवालों से जटिल सवालों की ओर बढ़ते गए और मेरी जिज्ञासा केवल मेरा व्यक्तिगत न रहकर सामाजिक होता गया। विवाह-संस्था के पीछे लगे हुए पूरे तंत्र को समझने की प्रक्रिया द्वन्द्वात्मक है। विवाह-संस्था अपने आप में एक बहुत जटिल संस्था है जिसको समझने के लिए मैंने अपने शोध-प्रबंध का यह विषय चुना।

### विषय सूची

1. विवाह-संस्था का विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में उद्भव और विकास 2. विवाह-संस्था और हिन्दी उपन्यास 3. विवाह-संस्था के संदर्भ में समकालीन हिन्दी उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन 4. समकालीन स्त्री उपन्यास-लेखन और विवाह-संस्था संबंधी चिंतन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

07. अमन कुमार

गोस्वामी तुलसीदास के काव्य का भारतीय जनमानस पर पड़े प्रभाव का अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. अनिल राय

Th 26314

### सारांश

विश्व साहित्य पर जिन कथा-कविताओं का विशेष प्रभाव पड़ा है, उनमें रामकथा अद्वितीय है। संस्कृत श्लोकों से व्युत्पन्न और कविता के रूप में, रामकथा का गाथा पहले साहित्यिक रामायण के उत्तर में पहली बार विकसित हुआ था, और समय के साथ पूरे भारतीय परिवार में फैल गया। इस कहानी को आधार मानकर विभिन्न भाषाओं में असंख्य पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। करोड़ों लोगों के दिलों में बसी 'श्री रामचरितमानस' और गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित इसके 'प्रदुभाई' को हिन्दी काव्य के क्षेत्र में एक चमत्कार ही माना जाना चाहिए। गोस्वामी तुलसीदास सच्चे अर्थों में लोकमानस की कथा हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उन्हें 'लोकदशी' कहा है। विश्व साहित्य में ऐसे बहुत कम साहित्यकार हुए हैं जिन्होंने समय की सीमाओं को लांघकर काल पर विजय प्राप्त की हो। चाहे उस लेखक का समय वर्तमान हो या भविष्य; ऐसे बहुत कम साहित्यकार हैं जिन्होंने हर काल में अपने पाठ को निरन्तर बढ़ाया है। भारतीय साहित्य में ऐसा सौभाग्य बहुत कम साहित्यकारों को मिला है - जिसने भारतीय जनता का दिल जीत लिया हो। गोस्वामी तुलसीदास ने भारतवासियों के हृदय की गहराइयों को, उनके भावों को, उनके भावों को, उनकी रुचियों को, उनके मनोभावों को चित्रित करने में अपार सफलता प्राप्त की है। प्रसिद्ध इतिहासकार हंसेंट ए. स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'अकबर द ग्रेट मुगल' में तुलसीदास के इस लोकप्रिय और प्रसिद्ध व्यक्ति के बारे में कहा है - 'उनका नाम समकालीन

इतिहास की पुस्तकों में नहीं आएगा, फिर भी वे अपने समय के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। भारत में। अकबर कितनी ही बार युद्ध में विजयी क्यों न हुआ हो, तुलसीदास उससे अधिक आदर पाता है, क्योंकि उसने करोड़ों स्त्री-पुरुषों के हृदय और मन को जीत लिया है। मैं उन्हें समस्त भारतीय साहित्य का सबसे विचारशील व्यक्ति मानता हूँ। अंत में विजेता, जिसकी ओर इतिहासकार हंसेंट ए. स्मिथ ने हमारा ध्यान खींचा है। यह क्यों संभव था? इस शोध प्रबंध का उद्देश्य उन वीर तत्त्वों की खोज करना भी है, जिनके कारण तुलसीदास यह विजय प्राप्त कर सके।

### विषय सूची

1. तुलसी का जीवन 2. रामकाव्य परम्परा और तुलसीदास 3. तुलसी-काव्य का महत्त्व और उसकी मार्मिकता 4. तुलसी-काव्य: लोक पक्ष एवं शस्त्र पक्ष 5. तुलसी की वैचारिकता। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

08. अमित कुमार  
दलित हिन्दी लेखकों का स्त्री विषयक दृष्टिकोण।  
निर्देशक : डॉ. दिनेश राम  
Th 26306

### सारांश

हिन्दी के दलित साहित्य की विचारधारा मूलतः बाबा साहेब डा. अम्बेडकर के सिद्धांतों की विचारधारा रही है परन्तु दलित साहित्य के अन्य भी कई पहलू हैं जिन पर बाबा साहेब अम्बेडकर द्वारा ही कुछ लिखा गया है। इस विषय का आधार वह दृष्टि है जिससे दलित लेखक दलित स्त्री को देखता है। उसकी समस्याओं को समझता है और अपने स्तर व विचारधारा के आधार पर समस्याओं के हल निकालता है। बाबा साहेब अम्बेडकर ने अपने स्तर पर दलितों की समस्याओं के हल निकाले थे। परन्तु उनकी सीमा यह थी कि सिविल कानून की दृष्टि में उन्होंने दलितों और सवर्णों में कोई भेद नहीं किया था। उन्होने सवर्ण और दलित स्त्री और पुरुष दोनों की सिविल संहिता को एक ही रखा। दलित स्त्रियाँ और पुरुष जिन कानूनों को आज और दलित जनता में एक नई अस्मिता का निर्माण किया। अछूतानंद ने दलित जनता में यह विचार प्रसारित किया कि दलित अपने आप में श्रेष्ठ जतियाँ हैं। भारत के नागरिकों के दो प्रकार हैं। पहले मूल नागरिक अर्थात् दलित और दूसरे जो बाहर से आए अर्थात् आर्य। अछूतानंद के आदि हिन्दू आंदोलन ने दलितों में गौरव की भावना भरी साथ ही मूल नागरिकता और सांस्कृतिक प्रभुत्व की बात उठाई। आदि हिन्दू आंदोलन को फैलाने में चंद्रिका प्रसाद जिज्ञासु द्वारा लिखे गये पुस्तिका साहित्य का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा।

### विषय सूची

1. हिन्दी दलित लेखन की पृष्ठभूमि और डॉ.अम्बेडकर का हिन्दू कोड बिल 2. हिन्दी दलित साहित्य की विभिन्न विधाओं में दलित पुरुषों की स्त्री संबंधी दृष्टि 3. दलित लेखकों की दलित स्त्री विषयक समस्याएं 4. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में अभिव्यक्त स्त्री-पुरुष संवेदना तथा समस्याएं 5.साक्षात्कार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

09. अलका

**स्वातंत्र्योत्तर हिंदी रंगालोचना और जयदेव तनेजा की रंद्ष्टि ।**

निर्देशिका : प्रो. कुसुमलता मलिक

Th 26283*सारांश*

साहित्य का मूल्य इस बात में निहित है कि वह अपने समकालीन परिवेश और आने वाले समय में कितना प्रासंगिक होगा और बदलते समय और परिस्थितियों के अनुसार अपनी भूमिका कैसे निभा पाएगा। यही बात साहित्यिक शोध पर भी लागू होती है। इस विषय को मेरे शोध का विषय बनाने का कारण यह है कि इस शोध में रंग आलोचना के विकास और विस्तार की अपार संभावनाएँ होंगी। मुझे विश्वास है कि प्रस्तावित शोध विषय की सम्भावनाएँ अपने समय एवं आने वाले समय में बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी तथा भविष्य में रंग आलोचना को एक महत्वपूर्ण एवं व्यापक दिशा देने में सक्षम होंगी। यह शोध प्रबंध हवा पर हिंदी रंग आलोचना के विकास और जयदेव तनेजा के व्यावहारिक रंगविज्ञान के प्रति समर्पित है। प्रस्तुत शोध विषय में स्वाधीनता के बाद रंग आलोचना के स्वरूप में किस प्रकार परिवर्तन हुआ और उसके विकास एवं विस्तार में जयदेव तनेजा की क्या भूमिका रही। इसका अध्ययन एवं विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस शोध में यह भी बताया गया है कि जयदेव तनेजा रंग आलोचना को दूसरे आलोचकों की तुलना में किस तरह अलग नजरिए से देखते हैं। हिंदी नाटक साहित्य और रंगमंच के गम्भीर विद्यार्थी समर्थ आलोचक जयदेव तनेजा की छवि में हमने यहाँ पाया है कि हिंदी रंग मोहन राकेश एक महत्वपूर्ण आलोचक हैं जिन्होंने व्यापक और व्यापक रूप से संकलित और संपादित किया है। मोहन राकेश की बिखरी प्रकाशित-अप्रकाशित रचनाएँ साथ ही उन्होंने अपनी रंग समीक्षा में नाटककार निर्देशक समीक्षक अभिनेता दर्शक और दर्शक आदि रंगमंच के लगभग सभी महत्वपूर्ण तत्वों और अंगों पर गंभीरता से विचार किया है। नाटक आलोचना के क्षेत्र में आलोचकों ने विभिन्न नाटककारों पर काम किया है लेकिन जयदेव तनेजा की तरह एक ही नाटककार के एक काम पर एक विस्तृत काम या पूरे साहित्य पर एक व्यापक और गहन काम एक साहित्यिक रंगमंच संपर्क से कहीं अधिक है। कम आलोचकों ने अभिनय किया है।

*विषय सूची*

1. स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नाट्य-परिदृश्य 2. स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख रंगकर्मियों की आलोचना दृष्टि 3. जयदेव तनेजा कृत हिंदी रंग-नाटकों के पाठालोचन का अध्ययन 4. जयदेव तनेजा की रंद्ष्टि 5. जयदेव तनेजा द्वारा प्रमुख नाटककारों की रंग-चेतना के विकास का अध्ययन 6. जयदेव तनेजा द्वारा की गई रंग-प्रस्तुतियों की समीक्षा (अनुवीक्षा) का अध्ययन। उपसंहार। साक्षात्कार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

10. उपासना

**प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य में भारतीय एवं पाश्चात्य जीवन मूल्यों का द्वंद्व ।**

निर्देशक : प्रो. रामनारयण पटेल

Th 26308*विषय सूची*

1. स्रोत एवं स्वरूप 2. जीवन मूल्य : भारतीय एवं पाश्चात्य संदर्भ 3. प्रवासी हिन्दी साहित्य : स्वरूप एवं अवधारणा 4. प्रवासी भारतीय रचनाकार : जीवन मूल्यों का द्वंद्व 5. भारतवंशी रचनाकार : जीवन मूल्यों का द्वंद्व। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

11. गुप्ता (साधना)  
ललित निबंधों में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति कके आयाम।  
निर्देशक : प्रो. मोहन  
Th 26476

*विषय सूची*

1. संस्कृति की अवधारणा और भारतीय संस्कृति 2. ललित निबंध : अवधारणा और विकास। 3. हजारी प्रसाद द्विवेदी पूर्व ललित निबंधों में भारतीय संस्कृति के आयाम 4. हजारी प्रसाद द्विवेदी युगीन ललित निबंधों में भारतीय संस्कृति के आयाम हजारी प्रसाद द्विवेदी युगोत्तर ललित निबंधों में भारतीय संस्कृति के आयाम। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

12. गुलियान (सौम्या)  
हिन्दी सिनेमा में चित्रित समलैंगिकता/क्वेयर समूह के स्वरूप का अध्ययन : 1990 से अब तक।  
निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह  
Th 26284

*विषय सूची*

1. क्वेयर विमर्श का इतिहास और हिंदी समाज 2. विभिन्न कलाएँ, जनमाध्यम और समलैंगिकता 3. हिंदी सिनेमा और समलैंगिकता 4. नब्बे के बाद हिंदी सिनेमा में समलैंगिकता का बदलता स्वरूप 5. भारतीय एवं वैश्विक कानूनों में समलैंगिकता एवं क्वेयर समूह की स्वीकृति का सवाल। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

13. झा (रंजीत कुमार)  
श्रीकान्त वर्मा की कविताओं में सत्ता-विमर्श।  
निर्देशक : डॉ. रामनारायण पटेल  
Th 26274

*सारांश*

सत्ता किसी व्यक्ति, संस्था, नियम या आदेश का ऐसा गुण या क्षमता है जिसके कारण उसे सही या प्रामाणिक मानकर स्वेच्छा से उस के निर्देशों का पालन किया जाता है। सत्ता के प्रयोग के कारण ही आधिकारिक नीतियाँ, नियम और निर्णय समाज में स्वीकार किए जाते हैं और प्रभावशाली ढंग से लागू किए जाते हैं। समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए उस पर नियन्त्राण किया जाना आवश्यक है और सत्ता समाज को नियन्त्रित करती है। प्रत्येक संस्था के अन्दर सत्ता का ढाँचा पाया जाता है। संगठन सत्ता का सर्जन करता है। सत्ता की निर्मिति में संगठन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। सत्ता और शक्ति के बीच मुख्य संबंध वैधता का होता है। सत्ता वैधता सहित होती है जबकि शक्ति वैधता रहित होती है। वर्तमान युग में सत्ता और शक्ति का भेद कम हो गया है। इस भेद के कम होने का कारण है वैधानिक स्थिति का अस्पष्ट होना। आज वैधता शक्ति सम्पन्न लोगों द्वारा निर्मित की जाती है। वर्तमान युग में वैधता स्वाभाविक न होकर औत्रिम है। वैधता के निर्माण के लिए सत्ता शक्ति के द्वारा समाज को प्रभावित करती है। शक्ति तीन प्रकार की होती है- 'राजनीतिक शक्ति', 'आर्थिक शक्ति' 'विचारधारात्मक शक्ति' आई।



*विषय सूची*

1. सत्ता की अवधारणा 2. श्रीकान्त वर्मा की कविताएं 3. श्रीकान्त वर्मा की कविताओं में सत्ता : एक मूल्यांकन 4. श्रीकान्त वर्मा और समकालीन कवि: सत्ता और व्यवस्था 5. श्रीकान्त वर्मा की काव्यभाषा। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

14. झा (रवि कुमार)

**विद्यापति के साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य।**

निर्देशिका : प्रो. ममता वालिया

Th 26301

*सारांश*

कोई भी रचनाकार अपने समय, समाज और संस्कृति की शूटिंग करता है और वह अपने रचनाकर्म करते समय अपने युग-यथार्थ की झंडे और झंडे लगाते हुए अपने लेखकीय व्यक्तित्व को आगे बढ़ा रहे थे। विद्यापति काव्य-व्यक्तित्व इन सीमित अंतर्द्वन्द्वों से निर्मित होता है और बाद में यही एक अंतर्द्वन्द्व अपना विस्तार स्थल है। विद्यापति का साहित्य इन अंतर्द्वन्द्वों से अटा-पडा है। वे शासकों के साथ भी हैं और लोक के साथ भी। उनके यहां 'शास्त्र' भी महत्वपूर्ण हैं और 'लोकचित्त' भी। उनकी समग्र साहित्य में 'गतिशीलता' और 'यथास्थितिवाद' का टकराव चलता रहता है। अपनी बहुस्पर्शिनी प्रतिभा के द्वारा वे 'विरोधों का सामंजस्य' स्थापित करने का प्रयास करते हैं और कपफ़ी हृद तक इसमें सफल भी होते हैं। 'लोक' और 'दरबार' दोनों जगह उन्हें समान पृतिष्ठा प रास होती है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में संदिग्ध विद्यापति एकमात्र कवि है, 3 जो 'लोक' और 'दरबार' दोनों को एक साथ लेकर चले और दोनों ही जगह उन्हें पृतिष्ठा मिली। इस प्रतिष्ठा माने सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों का अहम योगदान रहा है। किसी भी समाज के कुछ नैतिक 'मूल्य' होते हैं, जो उस समाज की छाया होते हैं और कुछ ऐसे 'मूल्य' भी होते हैं, जो समय के साथ संशोधित होते रहते हैं। विद्यापति अपने साहित्य में कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को पश्र देते हैं तथा कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को भी स्थापित करते हैं। प्रस्तुत खोज पर प्रबंध माने वही 'सामाजिक-सांस्कृतिक' मूल्यों की मांग की गई है, जिसके कारण विद्यापति आज भी 'लोकचित्त' में विराजमान हैं।

*विषय सूची*

1. विद्यापतियुगीन मिथिला : समय, समाज और संस्कृति 2. भक्ति आंदोलन की प्राणधारा और विद्यापति 3. विद्यापति के साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य 4. सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताएँ और विद्यापति का सौन्दर्यबोध 5. कृषि संस्कृति का सामाजिक आधार और विद्यापति का साहित्य। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

15. ठाकुर (सुबोध)  
 हिंदी उपन्यास और लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया (परिसर जीवन आधारित उपन्यासों के विशेष संदर्भ में: 1970 से अब तक) ।  
 निर्देशक : डॉ. आशुतोष कुमार  
 Th 26289

*सारांश*

निचले स्तर पर वास्तविकता से जुड़ा होने के कारण उपन्यास जीवन को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करता है। विविधता और बहुलता का अर्थ लोकतंत्र में अधिक है, जिसके कारण लोकतंत्र सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन से संबंधित उन सभी नकारात्मक परिस्थितियों का निवारण चाहता है जो मानव प्रगति के मार्ग में बाधक हैं। लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य को किसी भी प्रकार के भेदभाव से परे समानता का एक मंच प्रदान किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को कैंपस जीवन आधारित उपन्यासों के माध्यम से खोजा गया है। बदलते सामाजिक परिवेश की पृष्ठभूमि में शिक्षा के उद्देश्य और स्वरूप को एक दिशा देने की आवश्यकता को लोकतांत्रिक मूल्यों के माध्यम से संभव बनाया जा सकता है। वर्तमान युग में शिक्षा जगत में स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, भावात्मक एकता आदि लोकतांत्रिक मूल्यों का समावेश होने के कारण यह राष्ट्रीय एकता, धर्म निरपेक्षता तथा शिक्षा के अन्य उपयोगितावादी तत्वों से जुड़ता है। शिक्षा का अर्थ बौद्धिक स्तर में ज्ञान और व्यावहारिकता के परिष्कार से निर्धारित होता है। चूंकि शिक्षा एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो राष्ट्र की प्रगति का आधार है, इसलिए इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन लाना है जो सामाजिक विकास और प्रगतिशील मानव जीवन के अनुकूल हो।

*विषय सूची*

1. उपन्यास और लोकतंत्र : एक अध्ययन 2. हिंदी उपन्यास और लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया : एक सर्वेक्षण 3. 1970 से लेकर 1990 के मध्य के परिसर जीवन आधारित हिंदी उपन्यास और लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया 4. 1990 से लेकर 2000 के मध्य के परिसर जीवन आधारित हिंदी उपन्यास और लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया 5. 2000 से लेकर अब तक के परिसर जीवन आधारित हिंदी उपन्यास और लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

16. त्रिपाठी (अरुणा)  
 21वीं सदी का हिंदी सिनेमा : स्त्री-विमर्श के विविध आयाम।  
 निर्देशक : प्रो. मोहन  
 Th 26276

*सारांश*

सिनेमा एक ऐसा शक्तिशाली माध्यम है जो पल भर में लोगों के एक विशाल जनसमूह की भावनाओं को उत्तेजित, आनंदित, संवेदनशील और प्रेरित कर सकता है। मीडिया के बीच सिनेमा का क्षेत्र इतना व्यापक, गहरा और प्रभावशाली है जितना किसी और में नहीं। यह सभी कलाओं में सबसे प्रभावशाली और आकर्षक है। इन्हीं कारणों से यह मानव जीवन और जीवनशैली दोनों का प्रमुख अंग बन गया है। जनसंचार माध्यम किसी भी समाज में एक ऐसी कड़ी की भूमिका निभाते हैं, जो न केवल समाज को एक-दूसरे से जोड़ता है बल्कि विश्व के साथ अपना संबंध भी बनाए रखता है। सिनेमा भी जनसंचार माध्यमों का एक बहुत शक्तिशाली रूप है। यह कला के विभिन्न माध्यमों का अति आधुनिक रूप है। आधुनिक समय में यह जीवन का एक ऐसा आवश्यक अंग बन गया है जिसे हम जनसंख्या से अलग नहीं कर सकते। यह हर वर्ग के लोगों के मनोरंजन का सबसे लोकप्रिय साधन है। यह कला का वह शक्तिशाली माध्यम है जो किसी विशेष विषय पर आधारित कहानी के साथ अपने दर्शकों को दिखाता है, बताता है और उनका मनोरंजन करता है, जिसमें दर्शकों के दिल में गहराई तक पहुंचने की अनूठी क्षमता होती है। इसके बिना समाज की कल्पना तो की जा सकती है, लेकिन एक मजबूत राष्ट्र की नहीं। जैसे-जैसे कोई समाज अधिक उन्नत समाजों के संपर्क में आता है, वह संचार के उन्नत और अधिक प्रभावी साधन विकसित करता है। फिर चाहे इतिहास में लिखे शिलालेख हों या आज के समय का इंटरनेट। 19वीं सदी एक ऐसा प्रायोगिक दौर था जब दुनिया को कई अजूबे देखने को मिले और इसी दौरान एक ऐसे माध्यम की खोज हुई जिसमें जादू-टोना करने की क्षमता थी। आश्चर्य की बात यह है कि समय की परतें जैसे-जैसे उस पर चढ़ती गईं, कम होने के बजाय बढ़ती चली गईं और धीरे-धीरे उसने पूरी दुनिया को अपने प्रभाव में ले लिया। इस मंत्र का नाम 'सिनेमा' रखा गया। तकनीकी बोलचाल में, 'साइलेंट सिनेमा' 16 स्थिर फिल्म फ्रेम प्रति सेकंड और 'साउंड सिनेमा' 24 स्थिर फिल्म फ्रेम प्रति सेकंड की गति से गुजरने वाले प्रकाश का परिणाम है। आखिरकार, सिनेमा एक कला के साथ-साथ एक तकनीकी काम भी है, जो समय के साथ और अधिक उन्नत और जटिल होता गया है। लेकिन इसी वजन और जटिल तकनीक ने आंकड़ों को सचमुच जीवन में ला दिया। यहाँ कैमरा कभी शिल्पकार की 'कलम' बन जाता है, तो कभी 'कैंची'। यही इस माध्यम की परम शक्ति है। इसीलिए सिनेमा कला और तकनीक का मिलन है।

### विषय सूची

1. हिंदी सिनेमा का विकास 2. 21वीं सदी का हिंदी सिनेमा : बदलाव के बिन्दु 3. स्त्री-विमर्श की अवधारणा 4. स्त्री-विमर्श और सिनेमा 5. स्त्री-विमर्श के विविध आयामों का हिंदी सिनेमा पर प्रभाव। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

17. तनुजा

राजस्थानी लोक कथा की परंपरा में विजयदान देथा की कहानियों का अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. कुसुमलता मलिक  
Th 26286

*विषय सूची*

1. लोक सहित्य की आवधारणा एवं स्वरूप 2. राजस्थानी लोक कथा की परंपरा 3. विजयदान देथा : व्यक्तित्व एवं सृजन 4. विजयदान देथा की कहानियों में चित्रित लोक 5. विजयदान देथा की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

18. तिवारी (आशुतोष)  
**समकालीन हिंदी कविता का सौंदर्यशास्त्र।**  
निर्देशक : डॉ. राजेश शर्मा  
Th 26477

*विषय सूची*

1. सौंदर्यशास्त्र : अवधारणा एवं स्वरूप 2. सौंदर्यबोध के प्रस्थान बिंदु एवं हिंदी काव्य-परम्परा 3. समकालीन हिंदी कविता की पृष्ठभूमि 4. समकालीन हिंदी कविता का वस्तुगत सौंदर्य 5. समकालीन हिंदी कविता का शिल्पगत सौंदर्य। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

19. तिवारी (नीतू)  
**दस्तावेज़ी सिनेमा की राजनीति (1990 से 2015 तक) ।**  
निर्देशक : डॉ. आशुतोष कुमार  
Th 26310

*विषय सूची*

1. दस्तावेज़ी सिनेमा- अवधारणा और सैद्धांतिकी 2. दस्तावेज़ी सिनेमा का विकास 3. दस्तावेज़ी सिनेमा और राजनीतिक प्रतिरोध 4. दस्तावेज़ी सिनेमा और सामाजिक राजनीति 5. दस्तावेज़ी सिनेमा- बहस, चुनौतियों और संभावनाएँ । उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

20. दास (विद्या)  
**फणीश्वरनाथ रेणु और बिरिंचि कुमार बरुवा के उपन्यासों में आंचलिक चेतना।**  
निर्देशक : प्रो. रामनारायण पटेल  
Th 26288

*सारांश*

शोध के व्यापक परिदृश्य में तुलनात्मक अध्ययन एक विशिष्ट प्रविधि के रूप में सामने आती है। रचना परिवेश की समानता के आधार पर तुलनात्मक प्रविधि के जरिये किसी एक युग और वर्ग के रचनाकारों के साहित्य और भाषा की तुलना करके उससे अनेक समान तथा असमान तत्वों का पता लगाया जाता है तुलनात्मक साहित्य के

अध्येताओं का यह कहना है कि 'तुलना' का प्रस्थान बिन्दु अध्ययन करने वाले की अपनी भाषा और साहित्य होती है तुलनात्मक अध्ययन के व्यावहारिक पक्ष में एक भाषा प्रधान और दूसरी भाषा गौण होती है अर्थात् हम अपनी भाषा के संदर्भ में अन्य भाषा का अध्ययन करते हैं। इस विषय पर मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा या संस्कृति की दृष्टि से दूसरी भाषा व संस्कृति को समझता है। इस प्रकार व्यक्ति की अपनी भाषा मानक होती है और उसी मानक के अनुसार वह अन्य भाषाओं का मूल्यांकन करता है। मेरे इस शोध विषय के अंतर्गत 'आंचलिक' तत्व को लेकर हिंदी में फणीश्वरनाथ 'रेणु' और असमिया में बिरिचि कुमार बरुवा के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यहाँ मानक भाषा हिंदी होने के कारण हिंदी के आंचलिक उपन्यास-तत्वों के आधार पर तथा रेणु की उपन्यास-दृष्टि से क्रमशः असमिया आंचलिक उपन्यास और बिरिचि कुमार बरुवा के उपन्यासों में अभिव्यक्त आंचलिकता को देखने-समझने का प्रयास किया गया है।

#### विषय सूची

1. उपन्यास : आंचलिकता का संदर्भ 2. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में आंचलिक चेतना 3. बिरिचि कुमार बरुवा के उपन्यासों में आंचलिक चेतना 4. विवेच्य रचनाकारों के उपन्यासों में आंचलिकता : तुलनात्मक दृष्टिकोण विवेच्य रचनाकारों के उपन्यासों की भाषिक संरचना। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

21. पवन कुमार

**21वीं सदी की हिन्दी दलित कहानियों का सामाजशास्त्रीय अध्ययन।**

निर्देशक : प्रो. श्यौराज सिंह

Th 26474

#### सारांश

भारतीय पृष्ठभूमि में सिनेमा का प्रारंभिक इतिहास आशीष राजाध्यक्ष की 'महायुद्ध' में समाहित है; के बीच विकसित होते हुए देखा गया। सिनेमा का उदय और विकास 20वीं शताब्दी की सबसे उत्कृष्ट सामाजिक परिघटना के रूप में उभर कर सामने आया, नव-मुक्त देश के लोगों द्वारा खुद को अभिव्यक्त करने की आवश्यकता और अधिकार के लिए चुने गए सांस्कृतिक रूपकों के बीच। फिल्में यहाँ कभी भी केवल शू; यह मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि जीवनशैली, जुनून और अनुशासन के रूप में उभरा है। पी फिल्मों का अनुशासन बाजार से लेकर आम जनता की बोली और व्यवहार तक में झलकता है। ऐसे में इस शोध का यह प्रयास रहा है कि ऐसे प्रभावी सामाजिक "अंतरिक्ष" के रूप में मुख्यधारा के आगे और कौन से सिनेमाई विकल्प मौजूद हैं और जो सिने भाषा के रूप में उन विकल्पों में सबसे पुराना माध्यम है।

#### विषय सूची

1. समाजशास्त्रीय अध्ययन का आशय और स्वरूप 2. हिन्दी कहानियों की परंपरा और दलित कहानी 3. हिन्दी दलित कहानियों में अभिव्यक्त प्रश्न 4. हिन्दी दलित कहानियों में प्रतिरोध 5. हिन्दी दलित कहानी और कलात्मक प्रयोग। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

22. पांडेय (प्रिया)

**मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकतावाद।**

निर्देशिका : प्रो. रमा

Th 26298

### सारांश

मोहन राकेश नवीन कहानी आन्दोलन के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं। उन्होंने अपने लेखन कार्य की शुरुआत कहानी से की और बाद में कई महत्वपूर्ण नाटकों, एकांकी नाटकों, उपन्यासों, डायरियों, यात्रा वृत्तांतों, साहित्यिक लेखों और निबंधों तथा अनूदित साहित्य आदि की रचना कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। अपने समकालीन समाज और परिवेश के प्रति भी उतने ही सचेत और जागरूक रहे हैं। यही कारण है कि उनके साहित्य में उनके समकालीन परिवेश का यथार्थ चित्रण हुआ है। अपने जीवन और परिवेश के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण मोहन राकेश और उनका साहित्य समकालीन समाज और साहित्य में प्रचलित विश्वासों, वादों और आंदोलनों के प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी पश्चिमी आधुनिकतावादी साहित्यिक आंदोलन से प्रभावित थी। मोहन राकेश की कहानियाँ भी आधुनिकतावादी आन्दोलन से काफी प्रभावित रही हैं। आधुनिकतावाद मूल रूप से कला और साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आंदोलन है, जो आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण निर्मित स्थितियों, विचारधाराओं और दृष्टिकोणों के परिणामस्वरूप पश्चिम में प्रबोधन के बाद अस्तित्व में आया। मोटे तौर पर आधुनिकतावादी आन्दोलन का काल 1880-1930 माना जाता है, परन्तु इसका प्रभाव 1930 के कुछ समय तक बना रहा। आधुनिकतावाद पुरानी प्रचलित मान्यताओं, सिद्धान्तों और शैलियों का विरोध करता है और इसके स्थान पर नयी भाषा-शैली को नये विषय-वस्तु से बनाने पर बल देता है। . द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका और देश के विभाजन के बाद हिंदी में यह आधुनिकतावादी प्रभाव तेजी से विकसित हुआ। यद्यपि आधुनिकता का प्रभाव तारसप्तक और उसके कुछ अंशों के प्रकाशन के बाद [3] दिखाई देता है, लेकिन इसका चरम विकास चौथे दशक के अंत से छठे दशक और उसके कुछ बाद तक हुआ।

### विषय सूची

1. आधुनिकता का अर्थ तथा आधुनिकतावाद की अवधारणा 2. प्रमुख आधुनिकतावादी साहित्यिक आंदोलन 3. मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकतावाद 4. मोहन राकेश की कहानियों में विघटित होते वैवाहिक संबंध 5. मोहन राकेश की कहानियों में भाषा एवं शिल्पगत प्रयोग। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

23. पाण्डेय (अखिलेश कुमार)

**राष्ट्रधर्म पत्रिका के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकार।**

निर्देशक : डॉ. विजेन्द्र कुमार  
Th 26304

सारांश

आधुनिक युग जनसंचार के साधनों के विकास एवं उपयोग का युग है। इन अर्थों में पत्रकारिता को शायद सबसे महत्वपूर्ण कहा जा सकता है। क्योंकि वर्तमान समाज की जटिलता और संघर्ष की स्थितियों को पत्रकारिता के माध्यम से किसी अन्य माध्यम की तुलना में अधिक स्पष्टता और गहराई के साथ व्यक्त किया जा सकता है। वस्तुतः पत्रकारिता का यह महत्व आज के संदर्भ में ही नहीं बल्कि आजादी के पूर्व और आजादी के बाद के दौर में भी था। हालांकि आजादी से पहले पत्रकारिता एक मिशन था। उनके सामने एक ऊंचा आदर्श था, जबकि आजादी के बाद के दौर में पत्रकारिता धीरे-धीरे व्यावसायिकता का रूप ले रही थी, क्योंकि अब उनके सामने कोई बड़ा लक्ष्य नहीं था। उसी समय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी और भाऊफराव देवरस जी ने देश के लोगों को सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों और गौरवशाली ऐतिहासिक तथ्यों से परिचित कराने के लिए 'राष्ट्रधर्म' पत्रिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश और समाज जो एक बड़े बदलाव और संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, 'राष्ट्रधर्म' पत्रिका ने अपने संपादकीय लेखन कौशल के माध्यम से सामाजिक गंदगी को दूर करने की कोशिश की है। सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की प्रगाढ़ता और देश को उन्नति के शिखर पर ले जाने की प्रतिबद्धता राष्ट्रधर्म की पत्रकारिता के स्वर में झलकती है।

विषय सूची

1. समाज और संस्कृति : सैद्धान्तिक परिदृश्य 2. हिन्दी पत्रकारिता के सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकार 3. राष्ट्रधर्म पत्रिका : ऐतिहासिक परिदृश्य 4. राष्ट्रधर्म पत्रिका के सामाजिक सरोकार 5. राष्ट्रधर्म पत्रिका के सांस्कृतिक सरोकार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।
24. पाण्डेय (आशीष कुमार)  
सामाजिक अभिव्यक्ति के बदलते स्वरूप में हिन्दी सोशल मीडिया की भूमिका (फेसबुक, ट्वीटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब) ।  
निर्देशिका : प्रो. रेखा सेठी  
Th 26277

सारांश

हिंदी सोशल मीडिया विषय वर्तमान समय में 4 बहुत ही महत्वपूर्ण मार्केटिंग विषय है। जिस पर मैं प्रश्न खोजना चाहता हूँ कोशिश की है। हर युग में मानवाधिकारों को व्यक्त करने के लिए 4 अलग-अलग माध्यमों का इस्तेमाल किया जाता था। है। समय के साथ अभिव्यक्ति के माध्यम बदले हैं। कालान्तर में ये अभिव्यक्ति के माध्यम बने सोशल इंजीनियरिंग# को भी प्रभावित किया है। 4 उन्नीसवीं सदी में औद्योगिक क्रांति के बाद, पश्चिमी देश में बड़े पैमाने

पर 4 ग्रामीण से शहरी 3 प्रवास हैं। I4 पूरे दिन सोच-विचार करता रहा। 20वीं सदी के मोड़ पर जब नवउदारवाद और वैश्वीकरण 4 भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। बड़ी संख्या में लोगों ने अपने गांव और कस्बों को छोड़ दिया। 4 दूसरे स्थान पर चले गए (लेकिन रोजगार, शिक्षा/बेहतर अवसर आदि की तलाश में) 4 बड़ी संख्या में गांव से शहर में माइग्रेट किया गया (5. तेज गति से चलता है बी ई यह गतिविधि बी इंटरनेट द्वारा इतने लंबे समय तक समर्थित है दूरियाँ भी छोटी लगने लगीं। अब सारा संसार एक गाँव जैसा लगने लगा था। यह 5वीं शताब्दी विस्थापित शताब्दी है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर रहना और जाना। एक जमाना था जब बड़ी आबादी पैदा होती थी वह झुग्गी में रहती थी और 6 अपना जीवन व्यतीत करती थी। सोशल मीडिया का सामान्य अर्थ दिमाग में आता है 4 फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब लेकिन अब यह अवधारणा पुरानी हो गई है। अब यह सिर्फ दोस्तों से जुड़ने का जरिया नहीं रह गया है। बल्कि हम अपना समय किस वेबसाइट पर बिताते हैं, 4 वीडियो में क्या देखते हैं, किस ऐप से खाते हैं मांगे, लोग (4 से कैसे बात करें और हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक दिशा आदि सब कुछ सोशल मीडिया तय कर रहा है। वैश्वीकरण और इंटरनेट का आगमन इसके बाद पूरी दुनिया ने एक नए युग की ओर कदम बढ़ाया है, जिसके नाम पर कोई सहमति नहीं बन पाई। है। समाजशास्त्र (, संचार (, शिक्षाविद / विज्ञान (और लोग (ए))उत्तर-औद्योगिक समाज, सूचना युग, उत्तर-आधुनिक समाज, डिजिटल समाज को नामित करने के लिए नाम कोशिश की लेकिन हम इसे विश्व ग्राम के रूप में याद रख सकते हैं। वैश्वीकरण के बाद लोग एक 3 स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवासी भावनाओं को, हमारी संस्कृति को, हमारी भाषा को विकसित होने में समय लगता है। हम अपने गांव, शहर, तीज-त्योहार, त्योहार, सुख-दुख को एक-दूसरे से बांटने के लिए 3 पग ढूँढ रहे हैं।ऐसे में हमें अपने गांव, घर की याद आने लगी और शायद इसलिए हम बी. हम सोशल मीडिया से हैं। हम एक जगह अपने कॉफी हाउस, चौपाल, नरकडू, चौराहा आदि ढूँढने लगे। स्पष्ट था कि पलायन के बाद ये चीजें हमसे खो गईं। जब सभी लोग एक भौतिक स्थान पर एकत्रित हुए यदि यह संभव न हो, तो धीरे-धीरे मन के समय और 3 स्थान (5 दूरी) को कम करके कम किया जा सकता है। क्या यह मनुष्य ने एक तीसरा स्थान बनाया है जहाँ हम सभी एक साथ एक ही समय में इंटरनेट से जुड़ते हैं, एक दिन या अलग भी उपस्थित हो सकता है। उसी तीसरे स्थान को हम 'सोशल मीडिया' कहते हैं।इंटरनेट आधारित सोशल मीडिया का निर्माण पिछले दो दशकों की देन है।प्रभीम को समझने से पहले हमें यह जानना होगा कि इंटरनेट कब अस्तित्व में आया (कि बिना इंटरनेट के सोशल मीडिया का आगमन संभव नहीं था। सोशल मीडिया वास्तविक समाज के भीतर संचार का एक नया रूप है। K3K का एक आभासी समाज बनाता है। जिसका आधार इंटरनेट पर Tik5 है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि सभी सोशल मीडिया साइट्स पर 5 वर्ने इंटरनेट है।

*विषय सूची*



1. सोशल मीडिया : सैद्धांतिक पृष्ठभूमि 2. सोशल मीडिया के विभिन्न रूप : संक्षिप्त इतिहास  
3. हिन्दी सोशल मीडिया का प्रभाव 4. सामाजिक अभिव्यक्ति के बदलते स्वरूप में हिन्दी सोशल मीडिया की भूमिका 5. हिन्दी सोशल मीडिया सामाजिक अभिव्यक्ति : वैधानिक पक्ष 6. आँकड़ों का संग्रहण एवं व्याख्या। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

25. पाण्डेय (बीरज)

**21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में मानवाधिकार का स्वरूप।**

निर्देशिका : प्रो. कुमुद शर्मा

Th 26305

### सारांश

मनुष्य को केवल मनुष्य होने के कारण कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं जिन्हें नैसर्गिक या नैसर्गिक अधिकारों के रूप में परिभाषित किया जाता है। सभी मनुष्यों को जीवन और सम्मान का अधिकार है इन अधिकारों के कारण मनुष्य सामाजिक मानसिक और आध्यात्मिक विकास करता है। अधिकार एक गतिशील अवधारणा है इसीलिए वे मुद्दे भी जो कभी वर्जित विषयों के रूप में जाने जाते थे, आज भी चर्चा के केंद्र में हैं। बदलते समय ने मानवाधिकारों को कई नए मुद्दों पर चर्चा का विषय बना दिया। भय से मुक्ति भूख से मुक्ति और मानवाधिकारों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को केंद्र में रखना आज का सबसे चर्चित और आवश्यक विषय बन गया है। इस दृष्टि से भी मानवाधिकारों को केन्द्र में रखते हुए हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन भी समय की आवश्यकता है। वस्तुतः हिन्दी साहित्य में मानवाधिकारों की अवधारणा को लेकर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। महिलाओं दलितों आदिवासियों किन्नरों आदि की समस्याओं पर काफी शोध हुए हैं लेकिन मानवाधिकारों को केंद्र में रखते हुए अध्ययन के समग्र दृष्टिकोण का अभाव रहा है। इसके साथ ही हिन्दी साहित्य में दिव्यांगों पर्यावरण शरणार्थियों और विस्थापितों की समस्याओं पर भी छिटपुट रचनाएँ मिलती हैं। प्रस्तुत शोध इसी कमी को पूरा करने का एक प्रयास है।

### विषय सूची

1. मानवाधिकार की अवधारणा 2. भारत में मानवाधिकार की अवधारणा का विकास 3. हिन्दी उपन्यासों में मानवाधिकार का स्वरूप 4. 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में मानवाधिकार की अभिव्यक्तियाँ 5. 21वीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में मानवाधिकार के नए आयाम। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

26. पाण्डेय (मोहिनी)

**आधुनिक बोध और अज्ञेय के कथा साहित्य की स्त्रियाँ।**

निर्देशक : प्रो. संजय कुमार

Th 26478

### विषय सूची

1. आधुनिक बोध: अवधारणा और स्वरूप 2. आधुनिक साहित्य में स्त्री की छवि : भारतेन्दु युग से छायावाद युग तक 3. अज्ञेय के उपन्यास में स्त्री 4. अज्ञेय की कहानी में स्त्री 5. छायावादोत्तर युग में नई स्त्री-छवि के निर्माण में अज्ञेय की भूमिका। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।
27. पाण्डेय (श्रीकांत)  
**भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी कविता में सांप्रदायिकता-विरोध का स्वरूप।**  
 निर्देशक : डॉ. संजीव कुमार  
 Th 26295

### सारांश

वैश्वीकरण के दौर में इस बात पर सहमति बनी है कि निजीकरण और उदारीकरण को आगे बढ़ाना है। इसलिए, आर्थिक प्रश्न, मूल प्रश्न के संदर्भ में राजनीतिक दलों के बीच कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है। बुनियादी सवालों पर चुनावी राजनीति में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करते हुए वे एक-दूसरे पर बढ़त हासिल नहीं कर सके। इसलिए सामाजिक और धार्मिक अक्षमताओं का प्रश्न राजनीति के केंद्र में प्रमुखता प्राप्त करता रहा। वोटों के मामले में, धार्मिक अल्पसंख्यक, विशेष रूप से धार्मिक बहुमत, लामबंदी के मामले में अपेक्षाकृत प्रभावी थे। जाति, लिंग आदि की अक्षमताओं को धर्म की छत्रछाया में एक किया जा सकता है, क्योंकि धार्मिक भेदभाव का अर्थ है जाति, लिंग आदि सभी को काटकर। बहुसंख्यक धार्मिक अल्पसंख्यक के लिए अन्य केवल अल्पसंख्यक हैं। हमारा जीवन अपने ऐतिहासिक पाठ्यक्रम में और अधिक जटिल हो गया है। विज्ञान की तीव्र प्रगति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया है। जहां वैज्ञानिक प्रगति ने संचार की नवीनतम प्रणाली विकसित की है, वहीं इसने औद्योगिक उत्पादन की केंद्रीकृत संरचना के खिलाफ एक नई, अत्यधिक परिष्कृत, चुस्त और आक्रामक उत्पादन प्रणाली विकसित की है, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन अधिशेष का उपभोग करने के लिए नए बाजार क्षेत्रों की खोज की गई है। इसके साथ ही उनके आक्रमण की अनिवार्यता को स्थापित करने के लिए एक संस्थागत वैश्विक व्यवस्था का निर्माण किया गया और जब इसके खिलाफ बौद्धिक और कर्मकांडी प्रतिरोध हुआ तो इसके खिलाफ नए सिद्धांत गढ़े गए। इस प्रक्रिया के तहत वैश्वीकरण की अवधारणा का विकास हुआ। जो मूल रूप से मुक्त बाजार व्यवस्था और उस पर आधारित मुनाफाखोरी पूंजीवादी संस्कृति की हिमायत करती है। लेकिन विज्ञान के साथ-साथ कला के क्षेत्र में भी इस विचार की कड़ी आलोचना की गई। प्रतिरोध की इस प्रक्रिया में हिन्दी साहित्य की भी सकारात्मक भूमिका रही है। जिनकी ऐतिहासिक परम्परा में गत्यात्मकता और प्रतिरोध की प्रबल धारा दीर्घकाल से विद्यमान रही है। यह ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के अंतिम चरण में, अतीत में सामंतवाद के साथ संघर्ष करते हुए काफी शक्तिशाली हो गया था। वैश्वीकरण के समर्थकों ने अपनी ऐतिहासिक भूमिका को त्याग दिया और वैश्वीकरण विरोधी एकता को खंडित करने के लिए सामंती मूल्यों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया। इनमें से कुछ मूल्य ऐसे भी थे जिन्हें औपनिवेशिक काल में विदेशी शासक वर्ग ने अपने हितों के लिए खड़ा किया था, अब

बाजार की नियामक शक्तियों द्वारा उन्हें पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जा रहा है। सांप्रदायिकता एक ऐसा मूल्य था। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान औपनिवेशिक शासक वर्ग द्वारा लगाये गये इस पौधे को फलदायी मानते हुए कालान्तर में धार्मिक और शत्रुतापूर्ण आशय को अत्यधिक प्रमुखता दी गयी। हिन्दी कविता ने इस पूरे प्रकरण पर अपनी पैनी नज़र रखी और इसकी यथार्थवादी रचना के साथ-साथ इसकी आलोचना भी की। समसामयिक हिंदी कविता साम्प्रदायिकता और वैश्वीकरण के बीच आंतरिक सद्भाव की खोज करना चाहती है। वह वैश्वीकृत दुनिया में मानव समाज के एक उपभोक्ता समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया की आलोचना करती है। बजल मूल्य के अर्थ में फंसकर मानवीय संबंधों को उसकी प्रामाणिकता से नकारने की आलोचना करते हैं। भोग की अत्यधिक इच्छा से उत्पन्न होने वाली चेतना एक क्रॉस-कल्चर बनाने के मानव साहस को कुंद कर देती है। इस मामले में, 'जीवित' होने के बावजूद, प्रतिगामी शक्ति का उपयोग किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया की मान्यता साम्प्रदायिक विरोधी काव्य में मिलती है।

#### विषय सूची

1. भूमंडलीकरण की अवधारणा 2. सांप्रदायिकता का उद्भव और विकास 3. सांप्रदायिकता विरोधी कविता की मुख्य प्रवृत्तियां 4. सांप्रदायिकता विरोधी कविता की सामर्थ्य और सीमा 5. सांप्रदायिकता विरोधी कविता का शिल्प। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

28. बीना रानी  
कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री आकांक्षा।  
निर्देशिका : प्रो. कुमुद शर्मा  
Th 26279

#### विषय सूची

1. स्त्रीवादी अवधारणाएँ और स्त्री आकांक्षा के विविध आयाम 2. कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री-समाज 3. कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री छवि 4. कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री आकांक्षा 5. कृष्णा सोबती और मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों की भाषिक संरचना। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

29. मीणा (राजवीर सिंह)  
स्वतंत्रता पूर्व महिला लेखन में अभिव्यक्त स्त्री प्रश्न।  
निर्देशिका : प्रो. रमा  
Th 26313

#### विषय सूची

1. स्वतंत्रता पूर्व का महिला लेखन: एक परिचय 2. स्वतंत्रता पूर्व के महिला लेखन में अभिव्यक्त वैयक्तिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रश्न 3. स्वतंत्रता पूर्व के महिला लेखन में अभिव्यक्त स्त्री

शिक्षा 4. स्वतंत्रता पूर्व के महिला लेखन में अभिव्यक्त राजनीतिक एवं आर्थिक प्रश्न 5. स्वतंत्रता पूर्व के महिला लेखन का साहित्यिक स्वरूप। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

30. यादव (वन्दना)  
लोकप्रिय हिन्दी सिनेमा में विधवा जीवन।  
निर्देशिका : प्रो. कुमुद शर्मा  
Th 26282

*विषय सूची*

1. साहित्य, सिनेमा और समाज 2. भारतीय सामाजिक व्यवस्था और विधवा जीवन की अवधारणा 3. हिन्दी सिनेमा और विधवा जीवन 4. विधवा जीवन पर आधारित फिल्मों और फिल्मकारों का मूल्यांकन 5. हिन्दी सिनेमा एवं समाज में विधवा जीवन का मूल्यांकन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

31. यादव (सुशील कुमार)  
उत्तर औपनिवेशिकता और स्त्री-अस्मिता का संघर्ष (संदर्भ : हिन्दी की स्त्री आत्मकथा)।  
निर्देशिका : डॉ. अल्पना मिश्र  
Th 26303

*विषय सूची*

1. औपनिवेशिकता के स्रोत व परिस्थितियाँ 2. औपनिवेशिक परिवेश और स्त्री-आत्मकथाओं स्थितियाँ 3. अस्मिता के संघर्ष की आत्मकथात्मक अभिव्यक्तियाँ 4. वस्तुगत परिप्रेक्ष्य की जटिलता व स्त्री-संघर्ष की दिशाएं 5. भाषा का उत्तर-औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य और स्त्री-भाषा। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

32. रवि प्रकाश  
जनवादी आंदोलन के संदर्भ में हिन्दी कथा साहित्य का अध्ययन (1980-2010)।  
निर्देशक : डॉ. विनय विश्वास  
Th 26479

*विषय सूची*

1. जनवाद : एक सैद्धांतिक विवेचन 2. जनवादी आंदोलन : उद्भव और विकास 3. नब्बे के दशक का कथा-साहित्य और जनवादी आंदोलन 4. बीसवीं सदी के अंतिम दशक का कथा-साहित्य और जनवादी आंदोलन 5. इक्कीसवीं सदी के पहले दशक का कथा-साहित्य और जनवादी आंदोलन 6. जनवादी आंदोलन और कथा-साहित्य का रूप। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

33. रक्षा  
जायसी के काव्य में मध्यकालीन बोध के स्वरूप का अध्ययन।  
निर्देशक : डॉ. बृज किशोर

Th 26271

*सारांश*

साहित्य की यह विशेषता है कि वह जिस भी क्षण रचा जाए उसका सीधा संबंध अपने समय अर्थात् काल और समाज से होता है। इस संबंध का ज्ञान ही उसका बोध है। जायसी एक ऐसे ही साहित्यकार थे जो अपने समय के समाज को भली-भाँति समझते थे। वे भक्त कवि जरूर थे लेकिन वे एक सच्चे समाज सुधारक भी थे। इसका प्रमाण उनकी रचनाएँ हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से एक ओर उन्होंने ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति को व्यक्त किया तो दूसरी ओर अपने समय के समाज को बड़ी कुशलता पूर्वक प्रस्तुत किया। इनके साहित्य में इनका काल, इनका समाज पूर्णता के साथ आता है। साहित्यकार के समक्ष उसके समय का यथार्थ होता है। उस यथार्थ में जो नकारात्मक होता है उसे वह आदर्शों के माध्यम से सकारात्मक करनेका प्रयास करता है। एक महान साहित्यकार वही हो सकता है जो यथार्थ को देखते हुए युगीन समस्याओं का हल आदर्शपरक मूल्यों में खोजते हुए उनकी समाज में स्थापना के लिए प्रयासरत रहता है। मलिक मुहम्मद जायसी ऐसे ही कवि थे जिन्होंने अपने प्रेमाख्यानकों के माध्यम से लोक कल्याण की भावना से प्रेम का सन्देश दिया। साहित्य जगत में उनका योगदान अतुलनीय है, यह निसन्देह कहा जा सकता है।

*विषय सूची*

1. इतिहास बोध और मध्यकालीन बोध की अवधारणा 2. मध्यकालीन समाज 3. जायसी के काव्य में प्रेम के स्वरूप का अध्ययन 4. जायसी के काव्य में परमसत्ता का स्वरूप 5. जायसी के काव्य में सामन्तवाद, वर्ण व्यवस्था एवं नारी के स्वरूप का चित्रण 6. जायसी के काव्य में मध्ययुगीन साहित्यिक रुढ़ियों की अभिव्यक्ति। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

34. राज (रमेश कुमार)

**तुलसीदास के काव्य में आदर्श और यथार्थ का द्वंद्व।**

निर्देशक : डॉ. विमलेंदु तीर्थकर

Th 26287

*विषय सूची*

1. आदर्श और यथार्थ का अभिप्राय 2. तुलसीदास के काव्य का वर्ण-विषय 3. तुलसीदास के काव्य में आदर्श के रूप 4. तुलसीदास के काव्य में यथार्थ के रूप 5. तुलसीदास के काव्य में आदर्श और यथार्थ का द्वंद्व। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

35. राजेश्वर कुमार

**अज्ञेय का सौन्दर्यबोध।**

निर्देशक : डॉ. अविनिवेश अवस्थी

Th 26307

*विषय सूची*

1. सौन्दर्य : अवधारणा और स्वरूप 2. अज्ञेय : व्यक्तित्व और सौन्दर्यबोध 3. अज्ञेय का काव्य और सौन्दर्यबोध 4. अज्ञेय का कथा-साहित्य और सौन्दर्यबोध 5. अज्ञेय का यात्रा-साहित्य और सौन्दर्यबोध। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

36. राय (आयुषी)

**आधुनिक हिंदी काव्य में पौराणिक स्त्री चरित्र : विशेष संदर्भ 1900 से 1950 ।**

निर्देशिका : डॉ. ममता

Th 26300

*विषय सूची*

1. पुराण का अर्थ एवं प्रासंगिकता 2. पुनर्चना के प्रेरक स्थितियाँ 3. पौराणिक आख्यानों में स्त्री चरित्र 4. आधुनिक हिन्दी काव्य में आपौराणिक स्त्री चरित्र परिचय 5. आधुनिक हिंदी काव्य में आपौराणिक स्त्री चरित्रों का आलोचनात्मक अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

37. राहुल कुमार

**कवि प्रदीप के काव्य में राष्ट्रीयता और संस्कृति की संकल्पना।**

निर्देशक : प्रो. निरंजन कुमार

Th 26299

*विषय सूची*

1. राष्ट्रीयता की अवधारणा 2. संस्कृति की अवधारणा एवं स्वरूप 3. हिन्दी कविता की राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा और कवि प्रदीप 4. कवि प्रदीप के काव्य में राष्ट्रीयता की संकल्पना 5. कवि प्रदीप के काव्य में भारतीय संस्कृति की संकल्पना। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

38. रिज़वान फ़ातिमा

**स्त्री-रचित कथेतर गद्य लेखन में यात्रा के संदर्भ (1980-2015)।**

निर्देशक : प्रो. अपूर्वानंद

Th 26475

*विषय सूची*

1. यात्रा और यात्रा लेखन 2. स्त्री शिक्षा, स्त्री लेखन, स्त्री यात्रा लेखन 3. स्त्री यात्रा : आकांक्षा, अवसर तथा प्रभाव 4. स्त्री यात्रा : देश विदेश का संदर्भ 5. स्त्री दृष्टि : सांस्कृतिक- सामाजिक आधार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

39. रीना

**स्त्री-परुष संबंधों की पृष्ठभूमि में रीतिकालीन शृंगार काव्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन ।**

निर्देशिका : डॉ. सीमा रानी

Th 26515

### सारांश

साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों और जटिल प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन है, जो उन्नीसवीं शताब्दी के आसपास साहित्य के पहले पश्चिमी समाजशास्त्रियों और सामाजिक विचारकों द्वारा शुरू किया गया था। हालाँकि समाजशास्त्रीय पद्धति के प्रकाश में आने से पहले साहित्य और समाज के बीच कोई संबंध नहीं था, लेकिन ऐसा नहीं है, क्योंकि किसी भी काल का साहित्य अपने समाज और परिवेश से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। वह समाज से ही निर्माण सामग्री प्राप्त करता है। इससे हमें उस काल विशेष की सामाजिक स्थिति, पर्यावरण और उस वातावरण में रहने वाले लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। साहित्य एक ओर समाज से प्रभावित होता है और दूसरी ओर यह समाज को प्रभावित करता है। साहित्य अपनी विषयवस्तु से समाज की चेतना का विकास करता रहता है, कल्याणकारी आदर्श प्रस्तुत करता है। "साहित्य, समाजशास्त्र की तरह, मुख्य रूप से मनुष्य की सामाजिक दुनिया, उस दुनिया के लिए उसकी अनुकूलन क्षमता और बदलने की उसकी इच्छा से संबंधित है।" अतः "एक ऐसा साहित्य जिसका सरोकार केवल मनोरंजन करना है, जो केवल गुदगुदाने या भाषा की चतुराई दिखाने के लिए रचा गया है; यह निर्जीव साहित्य है, सत्यहीन, निर्जीव। इसीलिए साहित्य को समाज का पथप्रदर्शक माना जाता है जिसमें मानव समाज का कल्याण चाहा जाता है।

### विषय सूची

1. साहित्य के समाजशास्त्र की अवधारणा एवं स्वरूप 2. शृंगार रस की अवधारणा एवं स्वरूप: रीतिकाल पर उसका प्रभाव 3. स्त्री-पुरुष संबंधों की पृष्ठभूमि में रीतिकालीन शृंगार काव्य : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 4. रीतिकालीन शृंगार काव्य में प्रेम, काम एवं सौन्दर्य : आलोचनात्मक अध्ययन 5. स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में रीतिकालीन शृंगार काव्य का विश्लेषण। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

40. रेखा

सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से पदमावत एवं मधुमालती का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. अनिल राय

Th 26294

### विषय सूची

1. मध्यकालीन समाज और उसका स्वरूप 2. संस्कृति और उसका स्वरूप 3. सामाजिक दृष्टि से पदमावत और मधुमालती का तुलनात्मक अध्ययन 4. सांस्कृतिक दृष्टि से पदमावत और मधुमालती का तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

41. रेखा कुमारी

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य और लोक परंपराओं का अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. कुसुमलता मलिक  
Th 26275

*विषय सूची*

1. लोक परंपरा की अवधारणा और स्वरूप 2. आदिकालीन हिन्दी साहित्य एवं लोक परंपरा 3. पूर्व मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में व्यक्त लोक परंपरा 4. उत्तर मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में व्यक्त लोक परंपरा 5. मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में व्यक्त लोक परंपरा के विविध आयाम। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

42. विजय

हिन्दी कथा साहित्य में चित्रित शिक्षा एवं शैक्षणिक संस्थानों के स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन।  
 निर्देशक : डॉ. विनय विश्वास  
Th 26281

*विषय सूची*

1. शिक्षा, समाज और साहित्य का अंतर्संबंध 2. हिन्दी कहानी में शिक्षा एवं शैक्षणिक संस्थान 3. हिन्दी उपन्यास में शिक्षा एवं शैक्षणिक संस्थान 4. हिन्दी आत्मकथा में शिक्षा एवं शैक्षणिक संस्थान। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

43. विजय कुमार

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी दलित कहानियों में दलित अस्मिता एवं सरोकारों के विविध आयाम (1990 से अब तक)।  
 निर्देशिका : डॉ. ममता वालिया  
Th 26312

*विषय सूची*

1. अस्मिता: अर्थ, स्वरूप एवं आयाम 2. हिंदी दलित कहानियों की वैचारिकी 3. हिंदी दलित कहानियों का ऐतिहासिक अवलोकन 4. हिंदी दलित कहानियों के सरोकारों के विविध आयाम हिंदी दलित कहानियों की भाषा शैली। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

44. विष्णु

अंबेडकरवादी साहित्य चिंतन में अपेक्षा पत्रिका का योगदान।  
 निर्देशक : प्रो. आशुतोष कुमार  
Th 26481

*विषय सूची*



1. दलित विमर्श, दलित साहित्य और अंबेडकरवादी साहित्य चिंतन 2. दलित पत्रकारिता का विकास और अपेक्षा 3. अपेक्षा के संपादकीय और अंबेडकरवादी साहित्य चिंतन 4. अपेक्षा के प्रमुख विशेषांकों का आलोचनात्मक अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

45. वीरेन्द्र

**रघुवीर सहाय और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य में लोकतांत्रिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।**  
निर्देशिका : डॉ. रजनी दिसोदिया  
Th 26311

*विषय सूची*

1. लोकतांत्रिक चेतना का स्वरूप 2. साहित्य और लोकतांत्रिक चेतना 3. रघुवीर सहाय के काव्य में लोकतांत्रिक चेतना 4. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के काव्य में लोकतांत्रिक चेतना 5. रघुवीर सहाय और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की लोकतांत्रिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

46. श्वेता

**हिन्दी कथा साहित्य में थर्ड जेंडर की अवधारणा और स्थिति का अध्ययन (सन् 2000 से 2018)**  
निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह  
Th 26302

*विषय सूची*

1. सेक्स, जेंडर और थर्ड जेंडर की अवधारणा 2. भारतीय चिन्तन और साहित्य में थर्ड जेंडर की स्थिति 3. संविधारण और थर्ड जेंडर 4. थर्ड जेंडर पर आधारित उपन्यासों का विश्लेषण-भाग (1) 5. थर्ड जेंडर पर आधारित उपन्यासों का विश्लेषण-भाग (2) 6. थर्ड जेंडर पर आधारित कहानियों का विश्लेषण-भाग (1) 7 थर्ड जेंडर पर आधारित कहानियों का विश्लेषण-भाग (2) थर्ड जेंडर पर आधारित उपन्यासों और कहानियों में भाषा-शैली। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

47. शर्मा (राज कुमार)

**छायावादी कवियों की आलोचना दृष्टि (विषेश संदर्भ : जयशंकर प्रसाद)**  
निर्देशिका : प्रो. रचना सिंह  
Th 26273

*विषय सूची*

1. छायावाद : अवधारणा और युगीन परिस्थितियाँ 2. हिंदी आलोचना और छायावादी कवियों की आलोचना दृष्टि 3. प्रसाद का व्यक्तित्व एवं रचना संसार 4. प्रसाद की दार्शनिक चेतना और साहित्यिक मानदण्ड के विविध स्रोत 5. जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक प्रतिमान और उनकी आलोचना दृष्टि। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

48. शर्मा (विवेक)

दरिया साहब (बिहार वाले) के काव्य की सांस्कृतिक चेतना।

निर्देशक : प्रो. पूरन चंद टंडन

Th 26293

*सारांश*

प्रस्तुत शोध-प्रबंध बिहार के सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु बहुमूल्य सामग्री प्रस्तुत करने के साथ-साथ 'दरिया साहब (बिहार वाले) के काव्य की सांस्कृतिक चेतना' पर प्रथमतः प्रकाश डालने का सार्थक प्रयास है, साथ-ही-साथ यह उस जीवित संत परंपरा के विषय में जानकारी देने का भी प्रयास है जिसमें वर्तमान 150 मठ, 600 साधु और लगभग 5000 भक्त विद्यमान हैं। दरिया साहब के माध्यम से भारतीय विचारधारा विशेषतः संतमत, दर्शन, अध्यात्म के संबंध में पर्याप्त प्रकाश मिलता है। अतः यह इनके काव्य की सांस्कृतिक चेतना का आधार है।

*विषय सूची*

1. संत दरिया साहब : जीवन परिचय 2. संत दरिया साहब : युगीन सामाजिक पृष्ठभूमि 3. संत दरिया साहब : रचना संसार 4. संत दरिया साहब एवं दरियापंथ 5. संत दरिया साहब : दरियापंथ-अस्तित्व एवं प्रासंगिकता 6. संत दरिया साहब : काव्य भाषा। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

49. शिखा

**प्रेम और विद्रोह की अवधारणा और मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास।**

निर्देशक : प्रो. अनिल राय

Th 26290

*विषय सूची*

1. प्रेम और विद्रोह की अवधारणा 2. हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेम और विद्रोह की प्ररंपरा और उसका विकास 3. मनोहर श्याम जोशी के कथा साहित्य एवं कथेतर साहित्य में अभिव्यक्त प्रेम और विद्रोह 4. मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में अभिव्यक्त प्रेम और विद्रोह 5. मनोहर श्याम जोशी के उपन्यासों में शिल्पगत प्रयोग। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

50. सिंह (सतवीर)

**गजानन माधव मुक्तिबोध के साहित्य में विश्वदृष्टि।**

निर्देशक : प्रो. नीलम राठी

Th 26480

*विषय सूची*

1. मुक्तिबोध का जीवन एवं रचना संसार 2. विचारधाराओं के संदर्भ में मुक्तिबोध 3. विश्वदृष्टि: आर्षी एवं परिभाषा 4. 20वीं शताब्दी का राजनीतिक एवं सामाजिक फलक: मुक्तिबोध का वैश्विक चिंतन 5. मुक्तिबोध के साहित्य में विश्वदृष्टि। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

51. सिंह (साक्षी)  
**हिन्दी दलित आलोचना के वैचारिक आयाम।**  
 निर्देशक : डॉ. संजय कुमार  
Th 26297

*विषय सूची*

1. हिंदी दलित आलोचना के वैचारिक आधार 2. हिंदी दलित आलोचना पर वैचारिक प्रभाव 3. हिंदी दलित आलोचना में वैचारिक बहसें 4. परम्परा के मूल्यांकन की समस्या और हिंदी दलित आलोचना समकालीन हिंदी दलित साहित्य के मूल्यांकन की समस्या और हिंदी दलित आलोचना। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

52. सुजाता रानी  
**कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा की कथा-दृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन।**  
 निर्देशक : डॉ. अल्पना मिश्र  
Th 26309

*विषय सूची*

1. हिन्दी कथा साहित्य में कथा-दृष्टि का विकास 2. लेखिका परिपेक्ष्य 3. कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य : कथ्य एवं संवेदना 4. कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा का कथा-दृष्टि: तुलनात्मक अध्ययन 5. कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा का कथा साहित्य में शैलीगत वैशिष्ट्य। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

53. सुमन  
**हरियाणवी लोकगीतों में स्त्री की सामाजिक-चेतना**  
 निर्देशक : डॉ. महावीर सिंह वत्स  
Th 26285

*विषय सूची*

1. लोकगीतों का स्वरूप, अवधारणा और विशेषताएँ 2. हरियाणवी लोकगीतों का वर्गीकरण 3. हरियाणवी लोकगीतों में स्त्री की सामाजिक-चेतना 4. हरियाणवी लोकगीतों की भाषा और अभिव्यंजना पक्ष। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।